

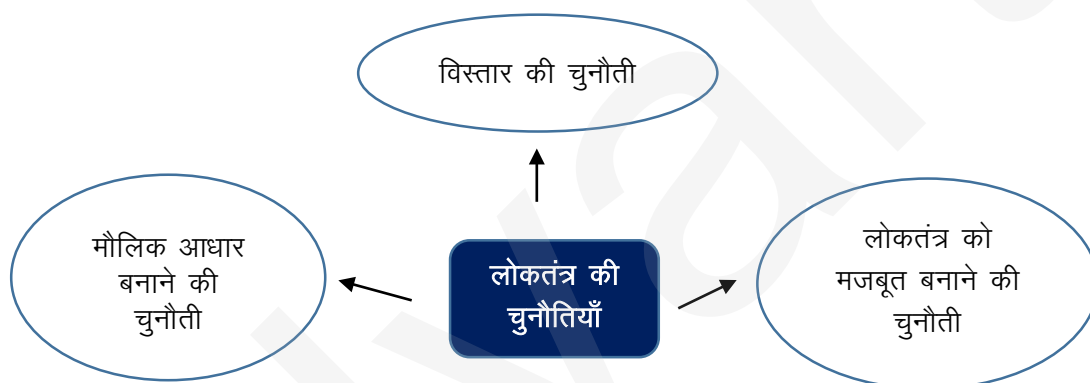
अध्याय-5

लोकतंत्र की चुनौतियाँ

चुनौती क्या है?

उन्हीं मुश्किलों को चुनौती कहते हैं जो महत्वपूर्ण तो है लेकिन उनपर सफलता भी हासिल की जा सकती है।

विश्व की लोकतांत्रिक शासन व्यवस्थाओं के समक्ष तीन प्रमुख चुनौतियाँ हैं :



भारतीय लोकतंत्र के समक्ष दो प्रमुख चुनौतियाँ हैं:

- विस्तार की चुनौती
- कार्यपद्धति / लोकतंत्र को मजबूत बनाने की चुनौती।

भारतीय लोकतंत्र की अन्य प्रमुख चुनौतियाँ:

आतंकवाद :

- धमकी, हिंसा, हत्या, अपहरण और सार्वजनिक संपत्ति को नष्ट करके शासन पर अपनी माँगों को मनवाने के लिए दबाव बनाना आतंकवाद है।
- सरकार का विकास से ध्यान हटकर आतंकवादी गतिविधियों पर अधिक समय तक रहना। उदाहरण— भारतीय संसद पर आतंकवादी हमला, मुम्बई के ताज होटल पर आतंकी हमला, जम्मू कश्मीर में आतंकी घटना आदि।

अलगाववाद :

- भाषा, जाति एवं नस्ल के आधार पर अलग देश की मांग करना।
- अपनी मांग को पूरा करने के लिए हिंसा का सहारा लेना। जैसे— कश्मीर को अलग देश बनाने की मांग, सिखों के लिए अलग देश खालिस्तान की मांग।

नक्सलवाद :

- लोकतांत्रिक व्यवस्था में विश्वास नहीं रखना।
- अपनी बात मनवाने के लिए हिंसा का सहारा लेना।

भ्रष्टाचार :

- सरकार द्वारा बने जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सभी लोगों तक सीमित मात्रा में पहुँचना और इनका दुरुपयोग कुछ लोगों के द्वारा अपने हित में करना। जैसे – रोजगार हेतु मनरेगा योजना में व्याप्त भ्रष्टाचार।

कालाधन :

- सही ढंग से कमाए गए धन पर सरकार को कर नहीं देना।
- गैर—कानूनी तरीके से कमाए गए धन— रिश्वत, कालाबाजारी, तस्करी इत्यादि। इसके कारण सरकार द्वारा जनकल्याणकारी योजनाओं में भरपूर पैसा खर्च नहीं हो पाता है।

बेरोजगारी :

- बेरोजगार नौजवानों का शोषण अपने राजनीतिक हित के लिए किया जाना।

अन्य समस्याएं :

- सरकार के तीनों अंग कार्यपालिका, विधायिका एवं न्यायपालिका के बीच टकराव।
- चुनाव में होने वाला अंधाधुंध खर्च।
- क्षेत्रवाद—भाषायी, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक आधार पर अलग प्रवेश की मांग करना। जैसे— गुजरात में सौराष्ट्र की मांग, असम में वोडोलैन्ड की मांग आदि।
- आपराधिक छवि वाले लोगों का पार्टी में स्थान।

बिहार में लोकतंत्र की चुनौतियाँ

भ्रष्टाचार :

सरकार द्वारा बने जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सभी लोगों तक सीमित मात्रा में पहुँचना और इनका दुरुपयोग कुछ लोगों के द्वारा अपने हित में करना। जैसे— वृद्धावस्था पेंशन में धांधली, मनरेगा में धांधली।

जातिवाद :

- जाति के आधार पर मतदान, एवं
- जातिगत आधार पर संघ एवं संगठन बनाना।

परिवारवाद :

बिहार में लोकतंत्र की चुनौती के रूप में परिवारवाद प्रमुख है।

- अपने ही परिवार के लोगों को आगे बढ़ाना।
- दलों में शीर्ष पर हमेशा एक ही परिवार के लोगों का रहना। इससे सत्ता में आम लोगों की भागीदारी सीमित हो जाती है। जैसे – चुनाव के टिकट बँटवारे में परिवार की प्राथमिकता, राजनीतिक पद पर नियुक्ति एवं नौकरी में भर्ती आदि।

राजनीतिक सुधार

राजनीतिक सुधार के लिए निम्न कार्य किये जा सकते हैं।

- देश में व्यापक स्तर पर शिक्षा का प्रसार।
- बेराजगारों के लिए रोजगार की व्यवस्था
- सामाजिक भेदभाव एवं असमानता को दूर किया जाना।
- निष्पक्ष चुनाव एवं नागरिकों की चुनाव में भागीदारी।
- राजनीतिक दलों की व्यापक भागीदारी।
- पंचायती राज व्यवस्था को मजबूत बनाकर।

विधायिका में महिलाओं का कम प्रतिनिधित्व

भारत की विधायिका में महिलाओं का प्रतिनिधित्व पहले आम चुनाव से लेकर 16वीं लोकसभा एवं राज्य की विधानसभाओं में बढ़ी तो है लेकिन स्थिति अभी तक संतोषप्रद नहीं है। जैसे—1952 के लोकसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 3% और 15वीं लोकसभा में लगभग 10% है जबकि 16वीं लोकसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व लगभग 10.23% रहा है। यह महिलाओं के जनसंख्या के अनुपात में काफी कम है।

बिहार बोर्ड की परीक्षा में पूछे गए प्रश्न

1. क्या आतंकवाद लोकतंत्र की चुनौती है? स्पष्ट करें।
2. आतंकवाद एवं अलगाववाद लोकतंत्र की चुनौती है स्पष्ट करें।
3. परिवारवाद एवं जातिवाद ने बिहार में किस तरह लोकतंत्र को प्रभावित किया है।

